arunjaity1:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:06 PM Page 170

मानव शिल्पी की एक कृति हूँ मैं !

हम सबको नानाजी ने साधारण पत्थर को तराश कर आगे बढ़ा दिया, जीना सिखा दिया। जो पीड़ित व उपेक्षित हैं, उनको हंसना सिखा दिया। हम 16 साल तक भगवान की पूजा करते समय समझ नहीं पाये कि साक्षात प्रभु श्रीराम जी की प्रत्यक्ष छाया हम सबके बीच में थी।

पढ़ाई करते समय जैसे हर विद्यार्थी का विचार चलता रहता है, वैसे ही मैं सोचती थी कि खूब पढ़ाई करूंगी, प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होऊंगी। स्नातकोत्तर के बाद नौकरी करूंगी और खूब पैसा कमाऊंगी, ऐशो-आराम से रहूंगी। पी.एच.डी. भी साथ में करती जाऊंगी और अच्छा पैसा कमाने वाले लड़के से शादी करके देश-विदेश में घूमने जाऊंगी। मेरे माता-पिता भी सोचते थे कि स्नातकोत्तर के बाद वे मेरी शादी करेंगे। घरवालों की यह भी मनोकामना थी कि उनकी बिटिया सक्षम बने, आवश्यकता पड़ने पर हर प्रकार का काम कर सके, ऐसा प्रयत्न उन्होंने भी किया लेकिन उनकी सोच और मेरी कल्पना जैसा मेरे जीवन में कुछ भी नहीं हुआ। मेरे विकास की डोर एक मानव राष्ट्रपिता के हाथ में आ गई।

मैंने अपनी सहेली के साथ चित्रकूट में 19 जून 1994 को प्रातः 6 बजे एकात्मता स्तोत्र के बाद मान्यवर नानाजी का दर्शन किया। जैसे ही उन्होंने मेरा नाम सुना, तुरंत नानाजी के चेहरे पर हर्ष जैसा जो भाव आया, वह मैं भूल नहीं सकती। उन्होंने कहा - 'यह भी लड़की है।" मैं बहुत पतली-दुबली थी। फिर नानाजी ने पूछा -"आगे क्या करने वाली हो?" मूलतः आंध्र प्रदेश की होने के कारण मेरी हिंदी अच्छी नहीं थी। मैंने कहा -"नानाजी हैदराबाद में डाइटीशियन की नौकरी मिल गई है। मैं नौकरी करूंगी।" नानाजी ने तुरंत मुझसे कहा -"तुम्हारी जैसी लड़कियों को नौकरी नहीं करनी चाहिए, सेवा करनी चाहिए।" मैं तब नहीं जानती थी कि नौकरी और सेवा में क्या अंतर होता है लेकिन पूरे दिन नानाजी की कही बात मेरे दिमाग में गूंजती रही। मुझे ऐसा लगा कि मेरे अंदर की भावनाएं परिवर्तित हो रही हैं। चित्रकूट से दूसरे दिन ही मुझे वापस जबलपुर जाकर यूजीसी की परीक्षा देनी थी। मैं परीक्षा देने भी नहीं गई। चित्रकूट के सभी कार्यकर्ता मुझे रोकने का प्रयास कर रहे थे। मैं घर वापस गई और माता-पिताजी को मनाने का प्रयास किया। वे माने नहीं। मेरे पिताजी नाराजगी के साथ चित्रकूट आए। नानाजी से मिले और बातचीत की। जैसे ही पिताजी ने नानाजी का दर्शन किया उनकी नाराजगी दूर हो गई। वे इतना प्रभावित हो गए कि उन्होंने नानाजी से कहा, "मैं अपनी बेटी को आपके पास छोड़ रहा हूं, पैसा बिल्कुल नहीं चाहिए, काम सिखाइए, 6 महीने बाद इसकी शादी भी करनी है।" ऐसा कहकर मेरा मन रखने के लिए वे मुझे चित्रकूट छोड़कर वापस चले गए।

नानाजी ने एक माह का समाज शिल्पी दंपत्ति शिविर चित्रकूट में लगाया। 30 मई 1996 को शादी और 1 जून 1996 में शिविर प्रारंभ। शिविर के पहले ही दिन मैं और मेरे पति वापस लौट गए। प्रातः मा. नानाजी को प्रणाम करने गए। नानाजी ने पूछा अभी आ रहे हो। हमलोगों ने कहा, "हमलोग रात में ही आ गए थे।" हमारे साथ और भी लोग सियाराम कुटीर आए थे लेकिन नानाजी को जानकारी नहीं थी। नानाजी उस शिविर में स्वयं तीन-तीन सत्र लेते थे। पूरा एकात्म मानवदर्शन। नानाजी ने एक माह में विस्तृत ढंग से शिविर में आए प्रशिक्षणार्थियों को समझाया।

प्रथम सत्र में नानाजी ने प्रारंभ किया, "लोग शादियां करते हैं, एक मंगलसूत्र और उसके ऊपर एक और मंगलसूत्र, फिर बड़ा हार। एक अंगूठी से काम नहीं चलता, 5 से 6 अंगूठियां, महंगी-मंहगी साड़ियां।" नानाजी के ऐसा कहते ही मैंने वहीं गहने उतारे और पोटली में बांधकर आश्रमशाला में भाभी के पास रखवा दिए। फिर नानाजी ने कहा, "लोग रात को घर चले जाते हैं। सबके साथ रह नहीं सकते।" तब मुझे लगा नानाजी यह बात कमरे में नहीं कह सकते थे, वहां क्यों बोले। यही नानाजी की खूबी थी, उस एक माह के शिविर में जो-जो उन्हें सिखाना-बताना था, वह सब बातें कह गए, क्योंकि उनका विचार पक्का हो गया था कि अब ये दोनों भाग के नहीं जाएंगे। ऐसा लग रहा था जैसे शिविर हमें ही बदलने के लिए लगाया गया हो। शिविर के अंतिम दिन नानाजी, हम सब कार्यकर्ताओं से क्या उम्मीद करते हैं, दीनदयाल शोध संस्थान को कहां तक ले जाना है, यह तीन पीढ़ियों का काम है, आदि बहुत सारी बातें बता रहे थे। मैं इतनी नासमझ थी कि मुझे लगा कि मुझे ही यह सब काम करना पड़ेगा और यह सोच कर डर गई। शादी के बाद एक बार नानाजी ने मुझसे कहा -"भोजन तुम बनाओ।" मैंने अलग-अलग चीजें बनाईं। नानाजी ने कहा, "रोटी लाओ।" मुझे रोटी बनाना नहीं आता था। उस समय तो नानाजी कुछ नहीं बोले लेकिन सबके सामने कहा, "होम साइंस की स्टूडेंट है, रोटी बनानी नहीं आती।" नानाजी आज की शिक्षा पद्धति पर चिंता जताते थे।

वैसे तो नानाजी मेरे ऊपर कभी गुस्सा नहीं हुए। मेरी शादी के तुरंत बाद की एक घटना है। मैं प्रातः 4 बजे उठ गई थी। जैसे ही कमरे से बाहर आई, मुंबई से पधारे जोशी काकाजी मिले। उन्होंने कहा, "परिक्रमा करने चलो।" नानाजी से पूछे बिना हमलोग कहीं बाहर नहीं जाते थे। नानाजी को बताने गई। परंतु नानाजी स्नानागार में थे। हमने वहां पर खड़े व्यक्ति को सूचना दे दी। और फिर मैं कामतानाथजी की परिक्रमा करने चली गई। एक घंटे की परिक्रमा होती है। परिक्रमा करके जब 6 बजे घर लौटती हूं तो देखती हूं कि नानाजी रसोई के पास दरवाजे पर दोनों हाथ से रास्ता रोककर खड़े थे। काकाजी तो सीधे कमरे में चले गए। मैं धीरे-धीरे आगे

लेखक परिचय

कौशल्या उपाख्य ***डा. नंदिता पाठक*** *16 साल पहले नानाजी के संपर्क में आई थीं। एक विद्यार्थी से संस्थान की उद्यमिता विद्यापीठ की निदेशक होने तक की उनकी यात्रा के हर कदम पर नानाजी की अमिट छाप है।*

बढ़ी तो रसोई में 6-7 महिलाएं हैं। कोई आटा गूंद रही थी तो कोई सब्जी काट रही थी। मैं समझ गई कि मामला गंभीर है।

मुझे देखने के साथ नानाजी ने कहा -"बड़ी भक्तिन बनी। परिक्रमा करने चली गई। एक बूढ़ा घर पर बैठा है, पूछकर जाना उचित नहीं समझा।" खूब जोर से डांटा। बाद में मुझे पता चला कि पहली रात श्रीमान रामशंवालकर बाबा आए थे। सियाराम कुटीर में अच्छी व्यवस्था न होने के कारण उन्हें जेपुरिया भवन में ठहराया गया था। उन्होंने सुबह-सुबह कहा, "नानाजी हम आपके पास रहना चाहते हैं। हम आपसे मिलना चाहते हैं।" तब नानाजी ने मुझे खोजा क्योंकि मेरे पति भी बाहर गए हुए थे। नानाजी मुझे कमरे में बुलाते रहे। मैं नहीं गई। नानाजी बाहर आए। कहा, "तुम नहीं रहती हो तो हमारा काम नहीं होता।" इस तरह नानाजी ने मुझे घर-परिवार संसार की देखभाल करना धीरे-धीरे सिखाया। धीरे-धीरे मैंने भी नानाजी को विश्वास दिलाया कि घर, अतिथियों एवं उद्यमिता विद्यापीठ के कार्य की देखभाल ठीक से संपन्न कर सकूंगी। शब्दों से कहने में नानाजी को विश्वास नहीं था, मेरा काम देखकर नानाजी का विश्वास जमता गया। नानाजी गलतियों को प्यार से ठीक करवाते चले गए। उद्यमिता विद्यापीठ के विकास में भी नानाजी से हम सब कार्यकर्ता सीधे चर्चा करते थे। खड़ंजा कैसे बिछाना है, कहां क्या लिखना है? लिखावट कैसी होनी चाहिए? बोर्ड का रंग क्या होगा? बेरोजगारी, बेकारी से कैसे मुक्त हो सकते हैं? ऐसे रास्ते हमलोगों को दिखाये। बेकरी इकाई, फल परिरक्षण इकाई, पैकिंग संबंधी इकाई आदि सबके लिए नानाजी हवाईजहाजों में मिलने वाले खाद्य पदार्थों, विदेशों में, बड़े आदमियों के घर में जो भी देखते थे, सैम्पल के रूप में हमलोगों के लिए ले आते थे। उद्यमिता विद्यापीठ में हम कार्यकर्ताओं से बनवाते थे, फिर दूसरों के सामने हम सब की तारीफ करते थे। जो भी बनाते थे, उसे बेचना भी सिखाया।

शादी के तीन साल बाद मैं जब गर्भवती हुई, उन्होंने तुरंत हमें बुलाकर खूब स्नेह किया। फिर पूरा परफ्यूम, जो दिल्ली से हमारे लिये लाये थे, वह पूरा मेरे ऊपर डाला, ताई जी से शॉल उढ़वाया। खूब खुश हो गये। हम उस समय नानाजी को पूछते थे, "पकौड़े खाएंगे क्या? भजिया खाएंगे क्या?" वे "हां" बोलते थे। हम लोग बनाकर खिलाते और खाते।

फिर नानाजी बहुत दिनों के बाद गर्भस्थ शिशु संस्कार की बात पर बौद्धिक देते हुये बोले, "नंदिता के पेट में जब अपूर्वा थी तो वह आती थी, पूछती थी कि नानाजी भजिया खाएंगे। मैं बोलता था हाँ तो उसे लगता था वह मेरे लिये बना रही है। पर हमें पता होता था, उसको खाने का मन रहता था। ऐसे गर्भ से जो संतान जन्म लेती है, उसका ध्यान रखना पड़ता है।" तब हमें समझ आया कि नानाजी को हम बहुत परेशान करते थे। पर वह मेरा पूरा-पूरा ख्याल करते थे, प्रसव के लिये भी न मां के घर, न सासू मां के घर जाने दिया और कहा, "तुम तो अच्छे घर की हो, इसीलिये तुम अच्छे महंगे अस्पताल में प्रसव कराओगी तो गांव में रहने वालों का क्या होगा? तुम यहीं रहोगी तो अच्छा होगा। तुम्हें यहीं रहना चाहिये।" लेकिन नानाजी ने उसके लिये पूरी व्यवस्थाएं कर रखी थीं। उस समय वे भी चित्रकूट में ही रुके थे और उन्होंने चित्रकूट में ही प्रसव करवाया। परन्तु उन्हें इस बात का हमेशा मलाल रहा कि वे उस समय उपस्थित न रह सके, उन्हें अचानक बाहर जाना पड़ा था। विटिया का नामकरण नानाजी के द्वारा कराया गया। उस कार्यक्रम में बेटी अपूर्वा को आशीर्वाद देने साधु-संत, महात्मा ग्रामवासी सभी आये। राजकुमारियों जैसा नामकरण संस्कार सम्पन्न हुआ। तुरंत उसी रात्रि को नानाजी ने हमें पत्र लिखा, "खुशी-खुशी आनंद के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ लेकिन जो तुम्हारा नाम नंदिता है, उसी के अनुरूप सभी को जोड़कर रखना, खुशी देना तुम्हारा काम है।" मैं समझ गई कि कहीं मेरे मन में अहंकार न आ जाये, इसके पहले ही नानाजी ने बहुत बड़ा दायित्व दिया।

पिछले तीन-चार साल से ऐसा हो गया था कि समय पर यदि नानाजी से नहीं मिल पाए, बात नहीं हो पायी तो वे इंतजार करते थे तथा चित्रकूट में फोन पर बात करते थे। इससे हम सब कार्यकर्ताओं को लगातार प्रेरणा मिलती रहती थी। 25 फरवरी 2010 को नानाजी ने जो काम सौंपा था, वह पूरा कर दिया गया था। उन्होंने हमसे कहा, "तुम लोगों ने मेरा पूरा काम कर दिया, मेरी बातें सब आ गई हैं, अब मेरा काम पूरा हो गया।" हम समझ नहीं पाए वे ऐसे क्यों कह रहे थे। हम सबको मा. नानाजी ने साधारण पत्थर को तराश कर आगे बढ़ा दिया, जीना सिखा दिया। जो पीड़ित-उपेक्षित हैं, उनको हंसना सिखा दिया। हम 16 साल तक भगवान की पूजा करते समय समझ नहीं पाये कि साक्षात प्रभु श्रीराम जी की प्रत्यक्ष छाया हम सबके बीच में थी।

लेकिन अब पल-पल, क्षण-क्षण नानाजी की यादें प्रेरणा का स्रोत बन रही हैं। नानाजी से हम सबको नाना का प्यार मिला। न घर याद आता था और न रिश्तेदारों, न घूमना फिरना, सिर्फ नानाजी। फिर स्वावलंबन अभियान के अलावा न कुछ याद आता था न कभी हम लोग परेशान हुए। अब केवल उनके बताए मार्ग पर सबको साथ लेकर चलना है एवं निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करना है। इतनी शक्ति तो हमें दी है नानाजी ने। ■